'चाण्डालकन्या' का वर्णन करें ? ।।

महाकवि बाण ने संसार को केवल प्रातिभनेत्रों से ही नहीं नहीं देखा था बल्कि अपने यौवनारम्भ में घुमक्कड़ बन कर प्रकृति के उद्वेजक तथा सलोने दृश्यों का साक्षात्कार किया था। कवि पहले द्रष्टा और बाद में स्रष्टा बनता है। बाण की दृष्टि ने जगत् के विविध और विचित्र दृश्यों के दर्शन किये थे। इसीलिए उनके वर्णन यथार्थ तथा चित्रोपम शैली में निबद्ध हैं। बाह्य जगत् के पदार्थों का यथोचित सांगोपांग वर्णन बाण की विशेषता है। अनुभूति की व्यापकता के साथ-साथ कल्पना का अक्रान्त-प्रवाह भी उनकी निजी विशेषता है। राजभवन के आस्थान से लेकर गहन अरण्यानी के विपुल दृश्य तक बड़े कौशल से उपनिबद्ध हैं। जहाँ एक ओर शबर सैनिकों तथा सेनापतियों का भयंकर एवं क्रूर कर्म वर्णित है वहीं सहज कारुणिक तपोधनों के प्रशान्त उदात्त तथा लोकसेवा के निश्चल भाव का सुन्दर वर्णन भी देखने को मिलता है। महाकवि ने अपने सभी पात्रों के वर्णन में उदात्तता का परिचय दिया है और किसी के प्रति कोई कृपणता नहीं दिखाई है।

राजा शूद्रक के दर्शनार्थ आई हुई चाण्डाल कन्या के विषय में प्रतीहारी कहती है कि - महाराज सुरलोक में आरोहण करते समय त्रिशंकु की राजलक्ष्मी जैसे क्रुद्ध इन्द्र के हुंकार से गिरी हुई हो ऐसी एक चाण्डालकन्या आपके दर्शन का सुखानुभव चाहती है। राजसभा में प्रवेश करने पर दूर से ही महाराज का दर्शन करो ऐसा प्रतीहारी के द्वारा निर्देश दिये जाने पर महाराज शूद्रक ने भी उसे अपलक नयनों से देखा - वह (चाण्डालकन्या) असुरों द्वारा छीने गये अमृत को वापस ले लेने के लिए कपट पूर्ण मोहिनी रूप धारण करने वाले भगवान् विष्णु के रूप का अनुकरण करने वाली थी, श्यामल वह इन्द्रनीलमणि की बनी हुई जंगम पुतली सी थी, नीले रंग के लहंगे से एड़ी तक उसका शरीर ढँका हुआ था, ऊपर लाल रंग की ओढ़नी ओढ़े हुए थी - इस वेष से वह लगती थी कि नील कमल की स्थली पर सन्ध्या के अरुण आतप आ पड़े हों। वह किञ्चित् पीतवर्ण की गोरोचना का -

Scanned with CamScanner

तिलक लगाने से ऐसी ज्ञात होती थी कि भगवान् शंकर के किरात वेष का अनुकरण करनेवाली तीन नेत्रों से युक्त भवानी हो। वह प्रतीत होती थी कि हृदय में श्यामल देहधारी भगवान् नारायण को धारण करने से उनकी शरीर प्रभा से साँवली बनी हुई लक्ष्मी हो, वह लगती थी कि क्रुद्ध शंकर के नेत्रानल से जलते हुए काम के शरीर से उत्थित धूम से मलिन बनाई गई रति हो, मदमत्त बलराम के हल से खींच लेने के डर से भागी हुई जैसे यमुना हो, वह अत्यन्त गाढ़े अलक्तक के लाल रंग से निर्मित पल्लव आदि के चित्रों से चित्रित पदारविन्द वाली थी मालूम होता था कि तत्काल मारे गये महिषासुर के रक्त से रंजित चरणों वाली कात्यायनी हो —

"आरचित गोरोचना रचित तिलक तृतीयलोचनामीशान रचित किरातवेषामिव भवानीम् ....
महिषासुर रुधिर रक्त चरणामिव कात्यायनीम्।"

बड़े बड़े मोती के दानों से निर्मित उज्वल हार को गले में पहनने से मालूम पड़ती थी कि श्यामलवर्ण होने से उसे यमुना समझकर उज्वल धारा वाली गंगा इसके गले में लिपट गई हो। खिले हुए उज्वल कमल के समान लोचनों के कारण वह शरद के समान मालूम होती थी, वह सघन केशों के कारण घन (बादल) रूपी केश-पाशवाली वर्षा ऋतु प्रतीत होती थी। चन्दन के पल्लवों का आभूषण धारण करने के कारण मलयाचल की महावृक्ष जैसी दीखती थी। वह चित्रा, श्रवण, भरणी आदि से विभूषित नक्षत्रमाला की भाँति विचित्र कर्णालंकारों से (सुसज्जित) एवं अलंकृत थी। हाथ में विराजमान कमल की शोभा से वह लक्ष्मी जैसी प्रतीत होती थी। चेतना को हर लेने के कारण वह मूर्छा के समान भासित होती थी। अकृत्रिम शोभा से सम्पन्न होने के कारण वह जंगली भूमि सी लगती थी। कुलीनता के अभाव में वह स्वर्गीय रमणी (अप्सरा) की भाँति प्रतीत होती थी। आँखों को पकड़ लेने से (आकृष्ट कर लेने से) वह —

निद्रा जैसी लगती थी। हाथियों के मुख से सम्पादित कमलिनी की भाँति वह मातंग कुल में उत्पन्न होने के कारण दूषित थी। स्पर्श के योग्य न होने के कारण वह मूर्तिहीन सी लगती थी। वह दर्शनमात्र फल होने के कारण लगती थी जैसे चित्र में बनी हो। चमेली (जाति) के बिना वासन्तिक सुषमा की समृद्धि के समान वह भी जातिहीन थी। कामदेव के पुष्प चाप का मध्य-जैसे मुट्ठी में पकड़ने योग्य रहता है वैसे ही इसका भी मध्य-(कमर) मुट्ठी में पकड़ लेने योग्य था। अलकापुरी को उद्भासित करने वाली कुबेर की लक्ष्मी के समान वह भी अपने अलकों-(बालों) से उद्भासित होने वाली थी। नई नई जवानी इसके शरीर पर अभी-अभी उत्पन्न हुई है और अनुपम सौन्दर्य से मण्डित इसका आकार था —

"अतिस्थूलमुक्ताफलधारिणेन शुचिना हारेण गंगास्रोत-सेव . . . . अचिरोपारूढ यौवनाम्।"

इस अनुपम सुन्दरी को देखने के कारण आश्चर्य-चकित होकर राजा (शूद्रक) सोचने लगा —

खेद का विषय है कि विधाता के सौन्दर्य सम्पादन का प्रयास अनुचित स्थान में हो गया यदि बनाया तो संभोग के सुख से-वञ्चित रहने योग्य कुल में क्यों इसको उत्पन्न किया? मुझे-भासित होता है कि प्रजापति ने भी मातंग जाति होने के कारण बिना स्पर्श किये ही इसका निर्माण किया है अन्यथा-इसमें लावण्य की यह कोमलता कैसे रह सकती थी। कठोर हाथ के स्पर्श से क्लेश पहुँचाये गये अंगों की कान्ति ऐसी हो ही नहीं सकती। इस प्रकार अत्यन्त विरुद्ध रचना करने वाले-विधाता को बार-बार धिक्कार है। क्योंकि यह अत्यन्त-मनोहर आकृति की होने पर भी क्रूर जाति की होने के-कारण असुरों की लक्ष्मी जैसी ज्ञात होती है जो-सुरता (देवजाति) की निन्दा करने वाली है एवं यह-सुरत (सम्भोग) के योग्य नहीं क्योंकि नीचजाति के-साथ किया गया सम्भोग निन्दित है - इस तरह रमणीय होने पर भी यह उद्विग्न कर रही है। इसी प्रकार सोचते हुए राजा को प्रगल्भ महिला की भाँति - जिसके कान का पल्लव थोड़ा खिसक गया था उस मातंग कुमारी ने प्रणाम किया। —

उपर्युक्त उद्धरणों में काली-कलूटी चाण्डालकन्या का वर्णन जिस ढंग से किया गया है वह सहृदय पाठक को चमत्कृत कर देता है। और उसे सन्देह होता है कि यदि बाण की काल्पनिक चाण्डाल-कन्या सामने मूर्त रूप में आकर खड़ी हो जाय, तो क्या वह 'मूर्छा के समान मनोहारिणि' (मूर्च्छामिव मनोहारिणीं) हो सकेगी? बाण को दुःख तो इस बात का है कि 'वर्णचित्रगत सुन्दरी की भाँति' (चाण्डाल कन्या होने के कारण) केवल दर्शन का ही विषय रह गई है, स्पर्श आलिङ्गनादि का नहीं- (आलेख्यगतामिव दर्शनमात्रफलाम्)।" बाण को उसके पतित जाति में जन्म लेने का खेद ठीक उसी प्रकार है जिस तरह भगवान् अग्नि को और भगवान् अग्नि तो आभरणप्रभा के व्याज से उसका जातिसंशोधन करने तक को तैयार हैं, क्योंकि वे सौन्दर्य के पक्षपाती हैं और बाण की तरह वे भी प्रजापति को चुनौती दे रहे हैं "(आपिंजरेण पराग्पिंजर नूपुरमणीनां प्रभाजालेन रञ्जितशरीरया पावकेनेव भगवता रूप एव पक्षपातिना प्रजापतिमप्रमाणीकुर्वता जाति संशोधनार्थमालिंगित देहाम्)।" और सौन्दर्य के पक्षपाती बाण ने नीचकुलोत्पन्ना चाण्डालकन्या की उपमा भवानी, लक्ष्मी तथा कात्यायनी से देने में कोई हिचकिचाहट नहीं दिखाई। काली चाण्डालकन्या को भी बाण ने इस सलीके से सजाकर सामने रखा है कि वह संचारिणी 'इन्द्रनीलमणिपुत्रिका' (चलती फिरती नीलम की बनी पुतली) दिखाई पड़ती है। उसके जघनस्थल पर रोमावलि के द्वारा वेष्टित करधनी सुशोभित है, जो मानो अनंगरूपी हाथी के शिर पर पहनाई हुई नक्षत्रमाला (26 बड़े बड़े मोतियों की माला) हो, वह शरद ऋतु की तरह कमल के समान विकसित नेत्रों वाली है, वर्षा की तरह घने बालों वाली (बादलरूपी बालों वाली) है, मलयपर्वत की तटी की तरह चन्दनपल्लव के अवतंस से युक्त है और नक्षत्रमाला की तरह चित्रविचित्र कर्णाभूषणों से विभूषित है।

इस प्रकार महाकवि बाण ने चाण्डालकन्या के स्वरूप वर्णन में महती कुशलता का परिचय दिया है जो समग्र संस्कृत साहित्य में अनुपम एवं अद्वितीय